परिचय:

दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (South Asian Association for Regional Cooperation - SAARC) की स्थापना 8 दिसंबर 1985 को बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हुई थी। यह संगठन दक्षिण एशिया के आठ देशों—भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव और बाद में अफ़ग़ानिस्तान (2007 में शामिल)—के बीच क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था।

तत्कालीन नेताओं की सोच:

1. जियाउर रहमान (बांग्लादेश के राष्ट्रपति)

सार्क की अवधारणा सबसे पहले बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति जियाउर रहमान ने 1980 में प्रस्तुत की थी।

उनका विचार था कि दक्षिण एशिया के देश आपसी संघर्ष और शीतयुद्ध की राजनीति से बाहर निकलकर क्षेत्रीय सहयोग के रास्ते पर चलें।

उन्होंने विश्वास किया कि गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी और पिछड़ेपन से लड़ने के लिए क्षेत्रीय सहयोग अत्यंत आवश्यक है।

2. इंदिरा गांधी / राजीव गांधी (भारत)

भारत ने प्रारंभ में सावधानीपूर्ण प्रतिक्रिया दी, परन्तु बाद में राजीव गांधी के प्रधानमंत्रित्व में भारत ने सार्क को एक सकारात्मक मंच माना।

भारत की सोच थी कि यह मंच द्विपक्षीय विवादों से हटकर बहुपक्षीय सहयोग पर केंद्रित रहेगा, जिससे क्षेत्रीय स्थायित्व और विकास को बढ़ावा मिलेगा।

3. जनरल जिया-उल-हक (पाकिस्तान)

पाकिस्तान ने भी शुरुआत में संशय दिखाया, लेकिन अंततः क्षेत्रीय मंच को स्वीकार किया क्योंकि यह मंच द्विपक्षीय विवादों (विशेषकर कश्मीर) से इतर सहयोग को बढ़ावा देता था।

4. अन्य देशों की सोच (नेपाल, भूटान, श्रीलंका आदि)

छोटे देशों ने इसे बड़े देशों के साथ संवाद और आर्थिक-सामाजिक विकास का अवसर माना।

श्रीलंका जैसे देश आंतरिक संघर्षों और आर्थिक चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्रीय सहयोग की महत्ता समझते थे।

मुख्य उद्देश्य:

1. आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति को बढ़ावा देना

गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, विज्ञान व प्रौद्योगिकी में सहयोग।

2. क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना

यह संगठन युद्ध या टकराव की बजाय आपसी समझ और सहयोग की भावना पर बल देता है।

3. सांस्कृतिक सहयोग

क्षेत्रीय सांस्कृतिक धरोहरों और मूल्यों को साझा करना।

4. अंतरराष्ट्रीय मंचों पर संयुक्त आवाज

वैश्विक मुद्दों पर दक्षिण एशियाई देशों को एकजुट होकर बोलने का मंच प्रदान करना।

5. आपसी विश्वास और संवाद को बढ़ावा देना

द्विपक्षीय विवादों को किनारे रखकर सहयोगात्मक माहौल बनाना।

निष्कर्ष:

सार्क का गठन उस सोच की उपज था जिसमें यह विश्वास किया गया कि भौगोलिक निकटता,
ऐतिहासिक-सांस्कृतिक समानता और साझा समस्याएं दक्षिण एशिया को एकजुट कर सकती हैं। तत्कालीन

नेताओं की मंशा थी कि यह संगठन विकासशील देशों को अपने दम पर आगे बढ़ने का रास्ता दे, जहां शक्ति और सहयोग की भावना एक साथ काम करे। यद्यपि यह संगठन अनेक बाधाओं से जूझता रहा है, फिर भी इसकी मूल भावना आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

महत्वपूर्ण तथ्य:

सार्क की पहली शिखर बैठक: 8 दिसंबर 1985, ढाका

संस्थापक सदस्य: भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, मालदीव

2007 में अफ़ग़ानिस्तान शामिल हुआ।